आभूषण भारस्वरूप

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आभूषण का अर्थ है गहना। गहना धातुओं से बनता है। कुछ बनावटी होते हैं, कुछ नकली और कुछ प्रामाणिक। भारतीय स्त्रियां आभूषण अधिक पसन्द करती हैं। गहने और कपड़े स्त्रियों को बहुत प्रिय होते हैं। इसलिये स्त्रियों को परिग्रह कहा जाता है। गृहस्थ जीवन विवाह के साथ ही प्रारम्भ होता है। आभूषण शरीर की शोभा को बढ़ाता है। यह बाह्य अलंकरण है। यह देखने में आकर्षक और सुन्दर लगता है। शरीर के प्रत्येक अंग में पहनने के लिए आभूषण होते हैं। यह दिखावटी या सजावटी वस्तु होती है। आभूषण केवल बाह्य अलंकरण हैं। यह आन्तरिक शोभा को नहीं बढ़ाते। आन्तरिक शोभा को बढ़ाने वाली वस्तु है चरित्र की निर्मलता। चरित्र ही मनुष्य का सबकुछ है। यदि मनुष्य का चरित्र नष्ट हो जाये तो उसका कोई मूल्य नहीं है। संसार के हर प्राणी सुख चाहते हैं दुःख कोई नहीं चाहता। शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार सभी के साथ होना चाहिए। बड़ो के साथ नम्रता का व्यवहार और छोटों के साथ बाल सुलभ व्यवहार होना चाहिए। आन्तरिक गुण त्याग वृत्ति है। यह एक ऐसा मानव का आभूषण हैं जो निष्कामता को बढ़ावा देती है।

क्षमा वीरस्य भूषणम् अर्थात् क्षमा को वीरों का आभूषण कहा गया है। त्याग, तपस्या, सहनशीलता, सुख–दुःख सहने की शक्ति सालीनता और सदाचार मानव के ऐसे आभूषण हैं जिसको धारण करने से चरित्र की निर्मलता बढ़ती है। आध्यात्मिकता या आध्यात्मिक ज्ञान मानव का सबसे बड़ा आभूषण है। किसी के दुर्गुणों को नहीं बल्कि सद्गुणों को ग्रहण करना चाहिए। आन्तरिक शक्ति का विकास करना चाहिए। जीवन को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। भीतरी और बाहरी आभूषणों का समन्वय होना चाहिए। सकारात्मक सोच को बढ़ाना चाहिए और नकारात्मक विचारो का त्याग करना चाहिए। हमारे देश में ज्ञान को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। कहा गया है कि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती। विद्या शब्द ज्ञान का वाचक है। विनम्रता विद्या से आती है, शिक्षा से आती है। विनम्रता से योग्यता प्राप्त होती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है और धन से सुख की प्राप्ति होती है। विद्या मूल है और सुख

उसका फल। अच्छा इंसान बनने के लिए विद्या और विनम्रता का योग आवश्यक है आभूषण का नहीं। पशु और मनुष्य में अंतर यही है कि मनुष्य ज्ञान सम्पन्न होता है और पशु ज्ञानहीन होता है। यदि मनुष्य में ज्ञान नहीं है तो वह भी पूंछ और सींग से रहित पशु ही है। धनवान तो कोई भी बन सकता है, किन्तु विद्यावान सभी नहीं बन सकते। विद्या या ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरुकुल वास या गुरु का सान्निध्य आवश्यक होता है। बिना गुरु के ज्ञान संभव नहीं। गुरु ही शिष्य को अनुशासन, विनम्रता, प्रेम, सहिष्णुता का पाठ पढ़ाकर पूर्ण मानव बनाता है। मानव समूह में रहता है। पशु भी समूह में रहते हैं। पशुओं के समूहों को समज कहा जाता है। इस संसार में अज्ञान ही सबसे बड़ा दुःख है और ज्ञान सबसे बड़ा सुख। देव गुरु और ईश्वर की कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है। अज्ञान को अंधकार कहा जाता है। अंधकार दो प्रकार का है। एक तो रात्रि का अंधकार जो कि सूर्य के प्रकाश से दूर हो जाता है। दूसरा मनुष्य के अन्तःकरण में स्थित अंधकार जिसे अज्ञान भी कहा जाता है, यह बहुत ही सघन होता है। इसे दूर करने के लिए ज्ञान रूपी दीपक की आवश्यकता होती है। इस अज्ञान को दूर करने के लिए शास्त्रवचन आवश्यक है। शास्त्रों के अध्ययन और उसके आचरण के द्वारा यह अज्ञान दूर होता है। इस अज्ञान के दूर होने से अन्तःकरण निर्मल हो जाता है। सरस्वती जो कि विद्या की अधिष्ठात्री देवी है उनकी कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में सर्वप्रथम सरस्वती माता की पूजा होती है। देवपूजन से मानव की बुद्धि निर्मल बनती है। मनुष्य सुख–दुःख के द्वन्द्व से परे जीवन व्यतीत करता है। अनुकूलता और प्रतिकूलता की स्थिति में मानव सम रहता है। अज्ञान या विद्या दुःख का कारण है और ज्ञान सुख का। सुख भी दो प्रकार के हैं– एक भौतिक सुख और दुसरा आध्यात्मिक। भौतिक सुख नश्वर है और आध्यात्मिक सुख शाश्वत। विद्या या ज्ञानरूपी आभूषण ही आध्यात्मिक सुख को प्रदान करता है। विनम्रता से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है और अशिष्टता मित्र को भी शत्रु बना देती है। इसलिए मनुष्य को विनम्रता धारण करनी चाहिए। वृक्ष जब फल से युक्त होता है तो नम्र होकर झुक जाता है। वैसे ही विनम्र व्यक्ति अहंकारहीन होता है, वह सदैव झुक कर चलता है। उसमें सहिष्णुता, समता आदि गुण स्वयं आ जाते हैं। ये गुण ही मानव के सबसे अच्छे आभूषण हैं। संसार में विद्यारूपी आभूषण ही ऐसी वस्तु है जिसकी सर्वत्र पूजा

होती है। विद्वान या विनम्र व्यक्ति जहां भी जाता है वहीं पर प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। विद्वान पुरुष ही जीवन में सम्यक् रूप से योग्यता और अयोग्यता में, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य में भेद करने में समर्थ होता है। आज के प्रजातांत्रिक युग में विद्या या ज्ञान बहुत आवश्यक है। बहुत बड़े–बड़े साम्राज्य और धन दौलत वाले पुरुष नष्ट हो गये काई उनका नाम भी लेने वाला आज नहीं है, किन्तु वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति और बाण, तुलसीदास जैसे अकिंचन किन्तु विद्या एवं विनय सम्पन्न महापुरुषों का नाम आज जन–जन का कंठहार बना हुआ है। ज्ञानरूपी आभूषण को धारण कर मनुष्य अमर हो जाता है। बाह्य आभूषण भारस्वरूप होते हैं किन्तु आन्तररिक आभूषण से मानव की गरिमा और मानव का सम्मान बढ़ता है।